हम शैक्षिक भ्रमण पर फिर कब जाएंगे ?

– रेखा चमोली

आमतौर पर हम यह मान लेते हैं कि हम जिस जगह पर रह रहे होते हैं, हमें उस जगह और उसमें पायी जाने वाली चीजों और घटित हो रही घटनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी है। लेकिन उसी चीज या घटना के बारे में बारीकी से जांच–पड़ताल करने पर पता चलता है कि हमें तो उसके बारे में बहुत सी बातें पता ही नहीं हैं।

ज्ञान को व्यवस्थित तरीके से बच्चे के सामने प्रस्तुत करने से बच्चे को नयी जानकारी को समझने व व्याख्या करने में आसानी होती है। इस प्रक्रिया में नई जानकारी को बच्चों के पूर्व अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह से बच्चों को अपनी अवधारणाओं के समझ विकसित करने में भी मदद मिलती है। एनसीएफ 2005 के मार्गदर्शक सिद्धान्तों में बच्चे के आसपास मौजूद स्थानीय ज्ञान को महत्व देते हुए उसे स्कूली ज्ञान से जोड़ने की सिफारिश की गई है। इसी क्रम में समुदाय और समाज में प्रचलित व्यवहारों और मान्यताओं के कक्षा–कक्ष की बातचीत का हिस्सा बनाए जाने की बात भी कही गयी है। बच्चे के आसपास नयी जाने वाली तमाम चीजें या घटनाएं समग्रता में होती हैं। बच्चों का इन वस्तुओं, क्रियाकलापों और घटनाओं से रोज ही आमना–सामना होता है। उदाहरण के तौर पर पानी के साथ बच्चों का वास्ता कई तरह से पड़ता है। जहां एक ओर वे पानी के लिए लम्बी लाइनों और उसमें होने वाली धक्का–मुक्की का अनुभव करते हैं। वहीं बोतल बंद पानी को दूर से निहारते हैं। बरसात के मौसम में पानी से खेल उनके जीवन का अहम हिस्सा होता है वहीं दूसरी ओर पानी से होने वाले रोगों और परेशानियों से भी उनका वास्ता पड़ता है। कई गांवों में दूर–दूर से पीने का पानी लाना बच्चों के जीवन में शामिल होता है। कई बार सभी लोगों की पानी के स्रोत तक एक समान पहुंच नहीं होती है। इस तरह पानी से संबंधित समाजशास्त्र, भूगोल और विज्ञान को बच्चे अपने जीवन में अनुभव करते हैं।

इन सब अनुभवों से उसकी विभिन्न संदर्भों को लेकर एक

समझ विकसित होती है। यह समझ अलग–अलग विषयों के रूप में न होकर समग्रता में बनी होती है। जीवन में विषय एक–दूसरे से जुड़े होते हैं और मिल–जुलकर किसी प्रक्रिया को अंजाम दे रहे होते हैं। भले ही हमें उनकी मानक या अकादमिक जानकारी हो या न हो। किसी एक जगह से दूसरी जगह छलांग लगाते समय बच्चा दूरी का अनुमान अपने लिए निर्धारित मानक के अनुसार लगाता है और सही जगह पर कूदता है। इस समय वह फीटे या मीटर की मदद नहीं लेता। उसका यह ज्ञान अधिक दूरी की कूद में भाग लेते समय उसकी मदद करता है और अब उसका ध्यान मानक दूरी पर भी जाता है। इस तरह वह अपने पूर्व ज्ञान का उपयोग नए ज्ञान के निर्माण के लिए करता है।

आमतौर पर हम यह मान लेते हैं कि हम जिस जगह पर रह रहे होते हैं, हमें उस जगह और उसमें पायी जाने

वाली चीजों और घटित हो रही घटनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी होती है। लेकिन उसी चीज या घटना के बारे में बारीकी से जांच पड़ताल करने पर पता चलता है कि हमें तो उसके बारे में बहुत सी बातें पता ही नहीं है। अपने आसपास पायी जाने वाली वनस्पतियों, जीव–जन्तुओं, रहने वाले लोगों की जीवन–शैली, खेतों में होने वाली फसलों, साग सब्जियों आदि के बारे में हमारी सीमित समझ होती है। उसी तरह हम अपने शहर में बहने वाली नदी को ही कितना जानते हैं। उसमें कब कितना पानी होता है, उसके कारण क्या हैं, उसके बहाव व पाट के कम ज्यादा होने की क्या वजहें हैं, उसमें प्रतिदिन कितना कूड़ा गिरता है और इसको कैसे रोक जा सकता है आदि जरूरी बातों की ओर हमारा ध्यान कम जाता है। जबकि नदी का हमारे जीवन से सीधा–सीधा संबंध है। अक्सर हम इन चीजों के लिए न तो खुद को जिम्मेदार मानते हैं और न ही किसी तरह की कोई जिम्मेदारी ही लेना चाहते हैं। जबकि हमारे आसपास हो रही प्रत्येक घटना का कभी न कभी हम पर परोक्ष या अपरोक्ष प्रभाव पड़ता ही हैं। शिक्षा के लक्ष्यों में शामिल है कि बच्चे अपने आसपास की चीजों व घटनाओं के बारे में संवेदनशील बनें। उनके मन में उसके बारे में जानने की इच्छा जगे। उनके मन में क्या, क्यों, कैसे के सवाल उठें। वे उस स्थिति या चीज के बारे में जांच–पड़ताल करना चाहें। वे किसी बात को ऐसे ही न मान लें बल्कि ठोक–बजाकर जांचे–परखें। अगर कोई समस्या है तो उसका हल ढूंढने का प्रयास करें। बच्चे अपनी प्रकृति से ही जिज्ञासु होते हैं लेकिन हम बड़े उनके इस गुण को कम करने में कोई कसर नहीं रखते। कम से कम हम अपने व्यवहार से उन पर तमाम तरह की रोक–टोक किसी न किसी बहाने लगाते ही हैं। कई बार उनकी सुरक्षा के कारणों से तो कभी यूं ही। बच्चों में चीजों और घटनाओं को जानने की नैसर्गिक रुचि होती है। शिक्षा और शिक्षक का लक्ष्य है इस रुचि को पोषित करना और विद्यार्थियों को जिज्ञासु बनाना। बच्चे अपने भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जगत में घटने वाली घटनाओं के कारण तलाशें और क्यों के सवाल उठाना व उसे हल करना सीखें।

उपरोक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक शिक्षक के अपने विशेष तरीके हो सकते हैं। शैक्षिक भ्रमण बच्चों में उत्सुकता जगाने, अपने परिवेश की गहन जांच–पड़ताल करने की दक्षताएं पैदा करता है। इस तरह बच्चे परोक्ष रूप में अवलोकन करने, तथ्य एकत्र करने, वर्गीकरण करने और सामान्य निष्कर्ष निकालने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। ये सभी कौशल ज्ञान निर्माण के कौशल और दक्षताएं हैं।

आमतौर पर जब हम शैक्षिक भ्रमण की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में स्कूल से कहीं दूर किसी खास जगह का ध्यान आता है। इस तरह के भ्रमण की अपनी उपयोगिता हो सकती है। परंतु इसके के लिए बहुत से संसाधनों की आवश्यकता होती है। जबकि हमारे स्कूलों के आसपास का परिवेश गहन खोज पड़ताल करने के अवसर उपलब्ध करवाता है। एक खेत, गांव, तालाब, नदी, अस्पताल, डाकघर, बैंक आदि का भ्रमण बच्चों को अवलोकन और उपयोगी जानकारी एकत्र करने के ढ़ेरों अनुभव दे सकता है। हालांकि इस तरह के शैक्षिक भ्रमण करने में एक परेशानी आ सकती है। हमारा सांस्कृतिक परिवेश शिक्षा को स्कूल की चारदीवारी में घटित होने वाली प्रक्रिया मानता है। अपने परिवेश में शैक्षिक भ्रमण को आयोजित करने की किसी शिक्षक की पहल को समय की बर्बादी कह सकता है। ऐसे में यदि शिक्षक इस तरह के सवालों के लिए तैयार रहे तो वह स्वयं को हताशा से बचाते हुए अपने शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति कर सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में समुदाय को भी शिक्षा के संवाद में शामिल कर सकता है।

मैं जिस स्कूल में काम करती हूं उसके आसपास बहुत सी ऐसी जगहें हैं जिनके बारे में मेरी जानकारी व ज्ञान बहुत सीमित है। ये जगह कई तरह के पेड़–पौधों व फसलों, नदी, गाड़, धारे–पनियारे, गांव व जीव जन्तुओं आदि से मिलकर बनी है। हमारे स्कूल में पिछले आठ वर्षों से एक गतिविधि निरंतर होती आ रही है। बच्चे सुबह बारी–बारी से गांव के समाचार बोलते व लिखते हैं। समाचारों में आई बातों पर चर्चा करते हैं। इन समाचारों में गांव व आसपास होने वाली हर तरह की जरूरी बात शामिल होती है। कभी–कभी इसमें बातों का दोहराव भी होता है। एक बार मेरा ध्यान इस ओर गया कि बच्चे उन दिनों खिलने वाले फूलों के बारे में बता रहे थे लेकिन वे चार या पांच फूलों के बारे में ही बता पा रहे थे जबकि उन दिनों (फरवरी के अंतिम सप्ताह में) बहुत से पेड़–पौधों पर नए फूल और पत्ते आ रहे थे। मैंने जब बच्चों से इस बारे में बात की तो उन्होंने कुछ और नाम बताए। साथ ही कहा कि उन्होंने कुछ और पेड़–पौधों पर फूल लगे देखे हैं पर उन्हें उनका नाम नहीं पता। मुझे लगा बच्चों को अपने आसपास पाए जाने वाले, लगभग रोज ही दिखाई देने वाले पेड़–पौधों के बारे में सामान्य जानकारी तो होनी ही चाहिए। इसके नतीजे में मैंने बच्चों को उनके आसपास

भ्रमण करने हेतु ले जाने का निश्चय किया। इसके लिए प्रबन्धन समिति की बैठक में अनुमति भी ले ली। शैक्षिक भ्रमण की शुरुआत पेड़–पौधों के अवलोकन से हुयी जिसमें बाद में अन्य संदर्भ भी जुड़ते गये। इस तरह मैंने अपने स्कूल में शैक्षिक भ्रमण की शुरुआत की। समय–समय पर एक सुनियोजित योजना बनाकर अपने निकटतम परिवेश में जांच–पड़ताल के अवसर उपलब्ध करवाए। इसी क्रम में हम (मैं व कक्षा 4, 5 के बच्चे) इस वर्ष फरवरी के अंतिम सप्ताह में शैक्षिक भ्रमण पर गए।

शैक्षिक भ्रमण को हम मुख्यत पांच भागों में बांटकर देख सकते हैं। 1. भ्रमण का उद्देश्य 2. भ्रमण पूर्व शिक्षिका व बच्चों की तैयारी 3. भ्रमण के दौरान की प्रक्रिया व किये जाने वाले क्रियाकलाप 4. भ्रमण के बाद नमूनों व जानकारियों का (मौखिक व लिखित) दस्तावेजीकरण 5. मिलजुल कर किसी निष्कर्ष तक पहुंचना।

1. **भ्रमण का उद्देश्य**– भ्रमण की योजना बनाते समय एक शिक्षक को एक विस्तृत योजना बनानी होती है। अर्थात किसी शैक्षिक भ्रमण के उद्देश्य क्या हैं? उनका शिक्षा के लक्ष्यों और पाठ्यक्रम से क्या संबंध है? मैंने इस भ्रमण के लिए मुख्यतः दो गतिविधियों को प्राथमिकता दी। पहली गतिविधि के अंतर्गत प्रत्येक 2–3 माह के अंतराल में पेड़–पौधों के अवलोकन को नोट करना था। जिसमें हम किसी विशेष स्थान पर उगे किसी पेड़ पौधे या झाड़ी का अवलोकन कर उसके बारे में जानकारी लिखते हैं व अगली बार फिर से अवलोकन कर उसमें हुए परिवर्तनों को देखने की कोशिश करते हैं। दूसरी गतिविधि का चयन गणित विषय को ध्यान में रखकर किया जिसमें संख्या, दूरी व लंबाई–चौड़ाई– ऊंचाई का अनुमान लगाना व विभिन्न वस्तुओं में पाए जाने वाले पैटर्न को जानना मुख्य था।

2. **भ्रमण पूर्व शिक्षिका व बच्चों की तैयारी**– भ्रमण पर जाने से पहले दिन मैंने स्कूल में बच्चों से इस बारे में बात की। हमने स्कूल के बाहर लगे शहतूत के पेड़ का अवलोकन कर अपने पिछले अवलोकन जो कि माह दिसम्बर में नोट किया था, से इस अवलोकन की तुलना की। यह तुलना पेड़ के तने, शाखाएं, पत्तियां, फूल व फल के बीच में थी।

इसके बाद हमने अपने स्कूल के आंगन की लंबाई चौड़ाई के बारे में कुछ अनुमान लगाए व उन अनुमानों को जांचा परखा। इसके लिए अपने कदम की माप व फीटे का उपयोग किया। इससे आंगन का क्षेत्रफल ज्ञात किया। मैंने बच्चों को यह भी बताया कि यह माप बिल्कुल सही माप नहीं है क्योंकि उसके लिए बहुत सावधानी से व प्रत्येक कोने की माप को भी ध्यान में रखना होता है पर यह माप सही माप के आसपास की माप हो सकती है। इस तरह के अनुमान हमने दरवाजे, खिड़की, श्यामपट, खंबे, दरी और मेज आदि के बारे में भी लगाए। साथ ही हमने कुछ पैटर्न नोट किए।

3. **भ्रमण के दौरान की प्रक्रिया**– हम गांव के किनारे से होकर खेतों तक जाने वाले रास्ते पर चले। हमने उन पेड़–पौधों का अवलोकन कर जानकारी नोट की जिन्हें पिछली बार नोट किया था। इस बार सर्दियों में बारिश अच्छी नहीं हुयी थी, इस कारण हरियाली कम थी। हमारे अवलोकन के रास्ते में पिछली बार दो मकानों का काम लगा हुआ था जो अब पूरा हो गया था। इस कारण उतनी जगह के पौधे कम हो गये थे। कुछ पौधे जिनका जीवन काल एक वर्ष से कम होता है वे भी नहीं दिखाई दिए। ज्यादातर पेड़ व झाड़ियां अपनी जगह पर थे। एक ही पेड़ या पौधे को अलग–अलग जगह पर नोट किया जैसे कि आड़ू के पेड़ को 4–5 जगहों पर नोट किया। हिंसर की झाड़ी को सड़क के पास व नहर के पास नोट किया। हमने खेतों में उगी फसलों के बारे में जानकारी नोट की।

हमने गणेश गंगा पर बने पुल की लंबाई–चौड़ाई का अनुमान लगाया व फिर उसे कदमों व फीटे से माप कर देखा। उसका क्षेत्रफल ज्ञात किया। इसी प्रकार हमने कुछ पेड़ों की ऊंचाई के बारे में अनुमान लगाए। हमने अपनी आज की यात्रा के बारे में अनुमान लगाए कि हम एक तरफ लगभग कितने कदम चले होंगे। कुछ बच्चों ने वापसी में अपने कदम गिने। कुछ ने थोड़ी दूरी तक गिने फिर अन्य बातों में व्यस्त हो गये। हमने कुछ पेड़–पौधों की पत्तियों व मकानों की खिड़कियों व जंगलों पर बने पैटर्न नोट किए। कुछ पत्तियों को अपने साथ लेकर

आए। घराट में जाकर आटा पिसाई होते हुए देखा। कुछ महिलाओं ने अरसे बनाने के लिये चावल पिसवाया था। वे उसे छत पर सुखा रही थीं। कुछ घरों की छतों पर बड़ियां सुखाने डाली हुयी थीं।

रास्ते में हमें अवतार के पिताजी, वैष्णवी की मां, आरती की मां और आदित्य की चाची आदि लोग मिले। बच्चों ने इनसे आसपास के पेड़–पौधों के बारे में पूछा। अवतार के पिताजी ने इस वर्ष वर्षा कम होने से हुए प्रभावों के बारे में बताया। वैष्णवी की मां छान से घास लेकर आ रही थी। उन्होंने अपनी स्वेटर की जेब में अपना मोबाइल रखा हुआ था व उस पर गढ़वाली गीत सुन रही थी।

हम अदिति की छान में गए। वहां उसकी बकरियां व गाय देखी। वापसी में एक बच्ची के घर पर पानी पिया। शुरू में बच्चे पानी पीने में संकोच कर रहे थे पर मुझे आराम से पानी पीता देख सबने पानी पिया। रास्ते में बहुत सी कारें और मोटरसाइकिलें पार्क थी। हमने उनके नामों व टायरों की बनावट, रंग आदि पर बात की। खेतों के पास टॉफी खाकर एक–दो बच्चों से रैपर नीचे गिर गये थे। इस पर दूसरे बच्चों का ध्यान दिलवाना और क्या होता अगर ये छिलके यहीं छूट जाते पर बात की। इस तरह से हमने आज कुछ अवलोकन किए। उनके बारे में अपनी शैक्षिक भ्रमण वाली कॉपी में नोट किया और कुछ पत्तियां व फूल अपने साथ लाए। पत्तियों व फूलों को तोड़ते हुए ध्यान रखा कि हम अपने लिए जरूरी फूल–पत्तियां ही लें ,अनावश्यक न तोड़ें।

4. भ्रमण के बाद नमूनों व जानकारियों का (मौखिक व लिखित) दस्तावेजीकरण– स्कूल वापस आकर हमने साथ लायी पत्तियों को पुरानी किताबों के बीच में दबाकर रख दिया। चूंकि हमारा कार्यक्रम कल ही तय हो गया था तो सभी बच्चे सुबह घर से अच्छी तरह नाश्ता करके आए थे। हमें आने में देर हो गयी थी। हमने भोजनमाता का रखा भोजन खाया। आज स्कूल में बात नहीं हो पायी। बच्चों को घर से आज के अनुभव लिखकर लाने को कहा। मैंने भी घर आकर अपने अनुभव लिखे। अगले दिन हम बातचीत के लिए बैठे। हमने अपने अवलोकनों के बारे में बात की। पेड़–पौधों में आए परिवर्तनों के बारे में बात की। अनुमान लगाने व पुल की लंबाई–चौड़ाई नापने में बच्चों को मजा आया था। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने घर के आंगन को भी इसी प्रकार अनुमान लगाकर मापा और उनका लगाया अनुमान उनके भाई–बहन या दोस्त के अनुमान से ज्यादा सही था। हमने इस पर भी बात की कि अलग–अलग जगहों पर उगे पेड़ों व झाड़ियों के पत्तों व फूलों में अंतर क्यों दिखायी दे रहे होंगे। हमने कल साथ लायी पत्तियों के आकार व पैटर्न को देखा समझा। कल कुछ बच्चों ने अपनी कॉपी पर अच्छी तरह से काम किया था जबकि कुछ का काम छूट गया था। आज मैंने बच्चों के चार समूह बनाए बच्चों ने अपने समूह में एक–दूसरे की मदद से काम पूरा किया व दो अवलोकनों का तुलनात्मक चार्ट समूहवार तैयार किया। जिसमें ध्यान रखा कि एक पेड़ या पौधे का अवलोकन एक ही बार आए। बच्चों ने कुछ नए पैटर्न भी अपनी कॉपी में बनाए।

इसके साथ ही कुछ अन्य विषयों पर बातचीत भी समानान्तर रूप से चलती रही। जैसे कि काम करते हुए मोबाइल पर गीत सुनना, आजकल घरों में मुख्य रूप से किए जाने वाले काम, घराट में अरसे के लिए चावल पिसवाना (पहले यह काम ओखली में किया जाता था), अपने साथी के घर पर पानी पीने में संकोच कैसा ? अगर सारे खेतों में घर बन जाएंगे तो क्या होगा?

5. मिलजुल कर किसी निष्कर्ष तक पहुंचना– बच्चों ने आपस में बातचीत से अपने सवालों के जवाब तलाशने का प्रयास किया।

मुझे लगता है इस तरह के भ्रमण से बच्चे खुश होते हैं। उन्हें शिक्षिका के साथ अपने परिवेश में घूमने का मौका मिलता है। वे अपनी चीजों के बारे में बहुत उत्साह से बताते हैं क्योंकि इनके बारे में वे अपनी शिक्षिका से ज्यादा जानते हैं। उनकी आपस में जिस तरह की अनौपचारिक बातचीत होती है, वह कक्षा–कक्ष में संभव नहीं। इस तरह शिक्षिका को भी बच्चों के करीब जाने का मौका मिलता है। कुछ बच्चे शिक्षिका द्वारा बतायी जा रही जानकारी को बहुत तत्परता से लिखते हैं। वे किसी भी बात को छोड़ना नहीं चाहते और पूरे भ्रमण के दौरान उसके पास ही रहना चाहते हैं। इस दौरान फोटो खिंचाना, एक दूसरे से हंसी–मजाक करना, एक दूसरे की मदद करना और थोड़ी बहुत गुटबाजी भी करना, जैसी बातें भी होती हैं। बच्चे अपनी किताबों में लिखी बातों को अपने आसपास देखते हैं। उनके संदर्भ तलाशते हैं। इससे निश्चित रूप से उन्हें अपनी शैक्षिक दक्षताओं को बढ़ाने में मदद मिलती है। मेरा मानना है कि इस तरह के भ्रमण समय–समय पर स्कूल में किए जाने चाहिए। बच्चों को भी इस तरह से घूमकर काम करना अच्छा लगता है तभी तो वे पूछते हैं, मैडम जी हम शैक्षिक भ्रमण पर फिर कब जाएंगे ?

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गणेशपुर, उत्तरकाशी में अध्यापिका हैं)